ISSN : 2393-9362
वर्ष-दस,अंक-38
अप्रैल - जून 2023

साहित्य सरस्वती

सराय विशेषांक

श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय,सागर (म.प्र.)

सादर, प्रो. नागेश दुबे

साहित्य सरस्वती

सराय विशेषांक

हिन्दी त्रैमासिक

वर्ष - दस, अंक - 38, अप्रैल-जून 2023

प्रधान संपादक

डॉ. सुरेश आचार्य

संपादक

डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय

उप-संपादक

सरदार पृथ्वीपाल सिंह

प्रो. पुरुषोत्तम सोनी

व्यवस्था एवं परामर्श

- के. के. सिलाकारी, एडवोकेट, अध्यक्ष
- पूर्व सांसद लक्ष्मीनारायण यादव, न्यासी
- डॉ. मीना पिम्पलापुरे, न्यासी
- पं. शुकदेव प्रसाद तिवारी, सचिव

श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय सागर की त्रैमासिक पत्रिका

सरायें – एक ऐतिहासिक दृष्टि : *प्रो. नागेश दुबे*

प्राचीन भारत में सरायें, धर्मशालाओं के रूप में निर्मित कराईं गईं थीं। मौर्य सम्राट अशोक के अभिलेखों से इसकी पुष्टि होती है। प्राचीनकाल में भारत के लगभग सभी प्रजावत्सल शासकों ने इन धर्मशालाओं (सरायों) का निर्माण कराया था।

भारतीय संस्कृति में हमेशा से विभिन्न रूपों में आश्रय देने की एक महत्वपूर्ण सामाजिक परम्परा थी, जिसके माध्यम से सर्वसाधारण जन को भी सेवा प्रदान की जाती थी। भारत में यात्रियों के लिए आश्रय की अवधारणा नई नहीं है। ऐतिहासिक अभिलेखों और ग्रंथों में 'धर्मशाला', 'विहार', 'सराय' और 'मुसाफिरख़ाना' जैसे शब्दों का उल्लेख है। इन प्रतिष्ठानों ने सभी पर्यटकों–चाहे वे तीर्थयात्री, विद्वान, व्यापारी या साहसी व्यक्ति कोई भी हों, को आश्रय प्रदान किया। भारतीय संस्कृति में हमेशा से विभिन्न रूपों में आश्रय देने की एक महत्वपूर्ण सामाजिक परम्परा थी, जिसके माध्यम से सर्वसाधारणजन को सेवा प्रदान की जाती थी। मोतीचन्द्र की पुस्तक 'सार्थवाह' के अनुसार, "प्राचीन भारत में सड़कों पर यात्रियों के आराम के लिए धर्मशालाएँ होती थीं, अंग और मगध के वे नागरिक, जो एक राज्य से दूसरे राज्य में बराबर यात्रा करते थे, उन राज्यों के सीमान्त पर बनी हुई एक सभा में ठहरते थे। रात में मौज से शराब, कबाब और मछलियाँ उड़ाते थे तथा सबेरा होते ही वे अपनी गाड़ियाँ कसकर यात्रा के लिए निकल पड़ते थे।" उपर्युक्त विवरण से यह पता चलता है, कि सभा का रूप मुगल युग की सराय जैसा था।

'शब्दों का सफर' नामक तीन खंडों वाली पुस्तक के लेखक अजित वडनेकर के अनुसार, फारसी में 'कारवाँ सराय' शब्द भी इस्तेमाल होता है जिसका मतलब राजमार्गों पर बने विश्रामस्थल। प्राचीनकाल से ही राहगीरों की सुविधा के लिए शासन की तरफ से प्रमुख मार्गों पर विश्राम-स्थल बनवाए जाते थे, जहाँ कुछ समय सुस्ताने के बाद राहगीर आगे का सफर तय करते थे। गौरतलब है, कि पुराने जमाने में अधिकांश यात्राएँ पैदल या घोड़ों की पीठ पर तय की जाती थीं। 'सराय' शब्द में मूलतः आश्रय का भाव है।

'धम्मपद अठ्ठकथा' के अनुसार, ऐसा पता चलता है, कि तक्षशिला के बाहर एक सभा थी, जिसमें नगर के फाटकों के बंद हो जाने पर भी यात्री ठहर सकते थे। यात्रियों के आराम के लिए सड़कों के किनारे कुओं और तालाबों का प्रबन्ध रहता था। एक तरह से कहा जा सकता है, कि भारत में यात्रा के मध्य आश्रय प्रदान करने की अवधारणा को संस्थागत बनाने वालों में सर्वप्रथम गौतम बुद्ध भिक्षु ही थे। भारत के समूचे दक्षिण-पश्चिमी क्षेत्र में यत्र-तत्र बिखरे हुए गुफा मंदिरों में पूजा और प्रार्थना के लिए चैत्य और विहार (मठ) दोनों थे। ये भिक्षु आबादी वाले कस्बों और गाँवों से दूर रहने के बावजूद भी यात्रियों और तीर्थयात्रियों की जरूरतों के बारे में सजग थे। इसी का परिणाम था, कि इन मठों में उन्हें आश्रय और भोजन दोनों मिलता था। यह याद रखना दिलचस्प है, कि ये मठ प्राचीन व्यापार मार्गों पर क्षेत्र के महत्वपूर्ण तीर्थ केंद्रों के बीच में ही स्थित थे।

संपर्क– विभागाध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय वि.वि. सागर (म.प्र.)

मध्यकाल में भी इन सरायों के निर्माण के प्रमाण मिले हैं। मुस्लिम शासन के दौरान 'सराय' शब्द का इस्तेमाल उत्तर भारत में बहुत प्रचलित हुआ। देश भर में मध्यकाल में अस्तित्व में आईं ऐसी कई आबादियाँ (बस्तियाँ) आज भी अस्तित्व में हैं, जिनके नाम के साथ-साथ 'सराय' शब्द जुड़ा है। मुगलों के पड़ाव या डेरे के तौर पर बसी आबादी को 'मुगलसराय' नाम से जाना जाता है। जाहिर है कभी यहाँ 'सराय' नाम की इमारत जरूर रही होगी, शेख सराय और बेर सराय, जैसे नामों से यह, स्पष्टतः दर्शित होता है। यहाँ तक कि दिल्ली के एक उपनगरीय रेलवे स्टेशन का नाम सराय रोहिल्ला है।

शेरशाह के प्रशासन की एक महान उपलब्धि सड़कों तथा सरायों का निर्माण करना था। सड़कें तथा सरायें किसी भी राष्ट्र के विकास व्यवस्था की धुरी मानी जाती हैं। शेरशाह सूरी ने राजधानी तथा मुख्य नगरों को जोड़ने वाली सड़कों का निर्माण कराया, जिससे साम्राज्य के सुदृढ़ीकरण के साथ-साथ व्यापार तथा आवागमन की भी उन्नति हुई। उसने मुख्य रूप से चार सड़कों का निर्माण करवाया, जिनमें पहली सड़क बंगाल के सोनारगाँव से सिंध नदी तक दो हजार मील लम्बी थी, जिसे 'सड़क-ए-आजम' (ग्राँड ट्रंक रोड) के नाम से जाना जाता था, दूसरी सड़क आगरा से जोधपुर और चित्तौड़ होते हुए गुजरात के बंदरगाहों तक जाती थी, तीसरी सड़क आगरा से बुराहनपुर तक जाती थी, उसने लाहौर से मुल्तान तक चौथी सड़क का निर्माण करवाया क्योंकि मुल्तान उस समय व्यापार का मुख्य केन्द्र था और मध्य एशिया के व्यापारिक काफिले यहाँ रुकते थे। उसने यात्रियों की सुविधा के लिए सड़कों के किनारे जगह-जगह पर सरायों, मस्जिदों और कुओं का निर्माण करवाया था।

शेरशाह ने अपने राज्य में यातायात को सुचारू बनाने के लिए कई उपाय किए। उसने कई सड़कों तथा सरायों का निर्माण करवाया तथा राज्य के प्रमुख स्थानों को सड़कों से जोड़ा। प्राचीन संस्कृत और प्राकृत ग्रंथों में उत्तर पथ और दक्षिण पथ का विपुलता से उल्लेख हुआ है। दक्षिण पथ उत्तर भारत से तमिलनाडु तक जाता था। गौतम बुद्ध के प्रथम उपदेश का स्थान सारनाथ, उत्तर पथ एवं दक्षिण पथ के संगम पर स्थित था। शेरशाह सूरी ने इसी मार्ग को सुधरवाकर उसे मजबूती प्रदान की होगी।

इतिहासकार प्रो. योगेश्वर तिवारी के अनुसार मुख्य रूप से सरायों का इस्तेमाल सैनिकों के रुकने के लिए होता था। सैनिक उस समय घोड़ों से चला करते थे, जिन्हें आराम के साथ दाना-पानी की जरूरत होती थी। इसीलिए कुछ-कुछ दूरी पर सरायें बनाईं गईं थीं। इन सरायों में मुसाफिरों के ठहरने का भी बेहतर इंतजाम रहता था। सरायों के दरवाजे शाम को बन्द कर दिए जाते थे। इन सरायों में सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम होते थे।

इतिहासकार कृष्णकांत शर्मा के अनुसार "शेरशाह सूरी के शासन काल में निर्मित सरायों के निर्माण में लखौरी ईंटों का इस्तेमाल हुआ है, उस समय लखौरी ईंटें हाथ से बनाईं जाती थीं। चिनाई जिप्सम, उड़द की दाल, चूना और सुरखी से की जाती थी।"

यात्रियों एवं व्यापारियों की सुविधा और सुरक्षा के लिए शेरशाह ने सड़कों पर प्रत्येक दो कोस (लगभग आठ) किलोमीटर पर सरायों का निर्माण कराया। इन सरायों में हिन्दू और मुसलमान दोनों धर्मों के यात्रियों के लिए रहने-खाने तथा सामान सुरक्षित रखने की अलग-अलग व्यवस्था होती थी। हिन्दू यात्रियों को भोजन और बिस्तर देने के लिए ब्राह्मण नियुक्त किए जाते थे। जो भी इन सरायों में ठहरते थे, उन्हें उनके पद के अनुसार सरकार की ओर से सारी सुविधाएँ दी जाती थीं। सरायों की व्यवस्था के लिए आसपास गाँव की कुछ जमीन

अलग से दी गई थी। प्रत्येक सराय में एक शहना (सुरक्षा अधिकारी) के अधीन कुछ चौकीदार होते थे। शेरशाह के समय सरायों का प्रयोग डाक-चौकियों के रूप में किया जाता था। प्रत्येक सराय में डाक को लाने-ले जाने के लिए, दो घोड़े सदैव तैयार रहते थे। जिनके माध्यम से संदेश-वाहक एक स्थान से दूसरे स्थान एवं सुलतान तक संवाद पहुँचाया करते थे।

शेरशाह पहला मुस्लिम शासक था, जिसने सरायों की उत्तम व्यवस्था के साथ-साथ यात्रियों एवं व्यापारियों की सुरक्षा का भी संतोषजनक प्रबंध किया था। एक प्रजावत्सल शासक था। वह सदा प्रजा के हित का ध्यान रखता था। इसलिए उसने प्रजा के हित के लिए अनेक कार्य किए।

शेरशाह ने सड़कों के किनारे अपने शासनकाल में लगभग 1700 सरायों का निर्माण करवाया। प्रत्येक सराय की देखभाल शिकदार के अधीन थी। सरायों में यात्रियों के ठहरने की अलग-अलग व्यवस्था थी। हिन्दू यात्रियों को बिस्तर और भोजन तथा उनके घोड़ों को दाना-पानी के लिए कारंदे (कर्मचारी) नियुक्त किए गए थे। डॉ. के. आर. कानूनगो ने "सड़कों और सरायों को साम्राज्य की धमनियाँ कहा है।"

इतिहासकार आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव की पुस्तक 'द हिस्ट्री ऑफ इंडिया' (1000 ई.-1707 ई. तक) में लिखते हैं कि शेरशाह एक महान, सड़क एवं सरायों का निर्माता था। प्राचीन हिन्दू राजाओं के नक्शे-कदम पर चलते हुए, उसने अपनी राजधानी को अपने प्रभुत्व के विभिन्न हिस्सों से जोड़ने के लिए कई सड़कें बनवाईं। सड़कों के दोनों ओर पेड़ों की कतारें होती थीं और यात्रियों और व्यापारियों के लिए चारदीवारी वाली सराय होती थीं। ऐसा प्रतीत होता है कि दिल्ली के तख्त पर काबिज होने के बाद शेरशाह ने अपने शासनकाल में पहले से मौजूद सड़क व्यवस्था, को ही मजबूत किया, एवं इन सड़कों के किनारों पर सर्वसुविधा युक्त सरायों का निर्माण कराया।

अभी हाल ही में गाजियाबाद में मेट्रो स्टेशन के पास खुदाई के दौरान मिली 'सराय' शेरशाह सूरी के जमाने में बनाई गई थी। सराय के निर्माण में लखौरी ईंटों का प्रयोग हुआ है। यह सराय बादशाही सड़क (सड़क-ए-आजम) के किनारे बनी थी। जो ग्रॉंड-ट्रंक रोड (जी.टी. रोड) के नाम से जानी जाती है। अब इसका संरक्षण एवं पुनर्निर्माण भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा किया जा रहा है।

मध्यकाल में यातायात के लिए दो साधन प्रयुक्त होते थे, सड़क मार्ग एवं जल मार्ग। इन सड़क मार्गों पर दोनों तरफ छायादार वृक्षों की कतार होती थीं। यात्रियों की सुविधा के लिए स्थान-स्थान पर सराय या विश्राम गृह होते थे। व्यापार के लिए जल मार्ग का भी प्रयोग किया जाता था। कश्मीर, बंगाल, सिंध वर्तमान उत्तर प्रदेश तथा पंजाब में नदी या जल मार्ग अधिक प्रयुक्त होता था।

मध्यकालीन भारत में सल्तनत काल तथा मुगलकाल की समयावधि में लगभग सभी शासकों ने महत्वपूर्ण सड़कों के किनारे एक निश्चित दूरी पर सरायों का निर्माण कराया। इन सरायों में सैनिक, व्यापारीगण एवं मुसाफिर ठहरा करते थे। इन सरायों के प्रवेश द्वार भव्य होते थे। लगभग सभी सरायों में प्रवेश हेतु चारों दिशाओं में विशाल प्रवेश द्वार निर्मित कराए गए थे।

'मुगल भारत में सड़क परिवहन' पुस्तक के लेखक सुभाष परिहार के अनुसार, हर पाँच कोस या आठ कोस (10 या 16 मील) के बाद सरायें होती थीं। उनका वास्तविक नाम 'कारवाँ सराय' होता था। मुगल शासन काल में आगरा-लाहौर राजमार्ग पर कम से कम सैंतीस स्थानों–

बड़, मथुरा, आजमाबाद, छट्ठा, कोसी, होडल, पलवल, ख्वाजा सराय, बदरपुर, निजामुद्दीन, बादली, नरेला, गन्नौर, समालख, पानीपत, घरौंडा, करनाल, तरौरी, थानेसर, शहबाद, कोट कच्छवाहा, शंभू, राजपुरा, सराय बंजारा, सरहिंद, खन्ना, सराय लश्कर खान, दोराहा, फिल्लौर, नूरमहल, नाकोदर, महलियान, कलां, सुल्तानपुर लोधी, फतेहबाद, नौरंगाबाद, सराय अमानत खान और सराय खान-ए-खाना पर 'कारवाँ सराय' होने के बारे में पता चलता है।

'दिल्ली तेरा इतिहास निराला' पुस्तक में 'सराय' की प्रत्यय वाले दिल्ली के गाँवों के नाम सहित उनकी बसावट के इतिहास की रोचक ढंग से विस्तृत जानकारी दी गई है। ऐसे ही कुछ गाँवों के नाम हैं, कालू सराय, लाडो सराय, नेब सराय, कटवाड़िया सराय, जिया सराय, दादो सराय, तोत सराय, शाहजी सराय, गाँव बुआ सराय, युसुफ सराय, सरबन सराय, गटटू सराय, सराय कबीरुद्दीन, सूरा सराय और हमीद सराय। जैसे दरख्त नेब यानी नीम के पेड़ के कारण नेब सराय तो तोते के नाम पर तोत सराय पड़ा। मालवीय नगर में विजय मंडल के उत्तर पश्चिम में लगभग 500 मीटर की दूरी पर कालू सराय नामक एक छोटा गाँव भी है।

'सेलिब्रेटिंग दिल्ली' में इतिहासकार नारायणी गुप्ता लिखतीं हैं कि, शाहजहाँनाबाद के आसपास यूसुफ सराय, शेख सराय, बेर सराय, काले खान सराय, बदरपुर सराय, जुलियाना सराय, रुहेला सराय और बादली सराय नाम की सरायें थीं। शहर में, चाँदनी चौक के पास एक आलीशान सराय थी, जिसका नाम शहजादी जहाँआरा के नाम पर था। यह सराय 1857 में आजादी की पहली लड़ाई के बाद गायब हो गई। जब शहर में रेलवे का आगमन हुआ और शहर के उत्तरी भाग में पूर्व से पश्चिम की दिशा की ओर एक बड़ा इलाका समतल किया गया तथा जहाँआरा बेगम की सराय के स्थान पर टाउन हॉल बना।

दिल्ली दरवाजे से सटी हुई एक सराय थी और पास ही मस्जिद जो अब भी है। दिल्ली दरवाजे को 'नकटे सराय' भी कहते थे, क्योंकि इसके मालिक नन्ने खां की नाक कटी हुई थी। लाल पत्थर से निर्मित यह सराय गढ़ी के रूप में दिखाई देती थी। सराय का प्रवेश द्वार ऊँचा और कंगूरों से सुसज्जित था। दरवाजे का फाटक सूरज डूबने के बाद बन्द कर दिया जाता था। इसमें घोड़ों, ऊँट और बैलगाड़ियों सहित एक हजार मुसाफिरों के ठहरने की व्यवस्था थी। मुसाफिरों के मनोरंजन और सुविधा के लिए गायक, वादक, नर्तक, नर्तकियाँ, नाई, धोबी, और दवा-फरोंश उपलब्ध थे।

डाक बंगलों और होटलों के पनपने और लोगों को बेहतर सुविधाओं की जरूरत के साथ ही सरायों का अस्तित्व सिमटने लगा। पर आज यह बात जानकर हर किसी को हैरानी होगी कि होटल में ठहरने वाले मेहमानों पर अभी भी 19वीं सदी (1867) का सराय अधिनियम लागू है। आज की दक्षिणी दिल्ली में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के सामने 'मुनिरका' नामक एक गाँव है। इस नाम के मूल में मुनीर खान है जो कि 15वीं सदी में इस इलाके का मनसबदार था। यहाँ भी सराय मुनिरखां थीं। 'मुनिरखां' का नाम समय के साथ 'मुनरिका' के नाम से प्रचलित हो गया। जबकि लेखक रघुराज सिंह चौहान और मधुकर तिवारी की पुस्तक 'जुलियानानामा, द स्टोरी ऑफ डोना जुलियाना डा कोस्टा, ए पुर्तगीज कैथोलिक लेडी एट द मुगल कोर्ट' के अनुसार, मुगल बादशाह औरंगजेब की 1707 में हुई मौत के बाद उसके बेटों के बीच तख्त पर काबिज होने को लेकर जजाऊँ के मैदान में छिड़ी जंग में जुलियाना और उसके पुर्तगाली तोपचियों ने अपने कारनामे से लड़ाई का

रुख बदलते हुए हिन्दुस्तान के भावी मुगल बादशाह, बहादुर शाह को बादशाह की गद्दी (सिंहानुरूढ़) दिलवाई थी। दक्षिणी दिल्ली स्थित ओखला में इसी साहसी महिला के नाम पर जुलियाना सराय थी।

'दिल्ली और उसका अंचल' पुस्तक के अनुसार, वर्तमान दिल्ली करनाल रोड से सब्जी मंडी को जोड़ने वाली सड़क पर एक सराय थी जो 'गुड़ की सराय' कहलाती थी और जिसे बाद के मुगल काल में बनवाया गया था। इसके तीन प्रवेश द्वारों से, जिनके दोनों छोरों पर मेहराबी दरवाजे हैं, पुरानी ग्रांड ट्रंक रोड गुजरती थी। यह ज्यादातर ईंटों से निर्मित है यद्यपि उसकी परत में बलुआ पत्थर का भी इस्तेमाल हुआ है। ये द्वार जैसा कि उनके दोनों प्रवेश द्वार पर स्थित अभिलेख से पता चलता है कि इसे नाजिर महलदार खां ने 1728-29 ई. में बनवाया था।

मुस्लिम शासकों में शेरशाह सूरी ने सरायों एवं सड़कों के निर्माण में सर्वाधिक रुचि ली। शेरशाह प्रथम ऐसा शासक था जिसने अपने पूरे साम्राज्य में सड़कों एवं सरायों का निर्माण कराया, पहले से निर्मित 'सरायों' का जीर्णोद्धार कराया। इन सरायों में सभी मूलभूत सुविधाएँ प्रदान कराई थीं। मुगल काल में शासकों ने सरायों का निर्माण एवं जीर्णोद्धार जारी रखा। मुगल शासकों के साथ-साथ उनके अधीनस्थ क्षेत्रीय शासकों एवं अधिकारियों एवं समाज के सम्पन्न व्यक्तियों ने भी सरायों के निर्माण एवं व्यवस्था में योगदान दिया।

अंग्रेजों के शासन में भी सरायों का निर्माण अनवरत चलता रहा। उनके समय सराय, रेस्ट हाउस या बंगलों के नाम से जानी जाने लगीं।

'सरायें' वास्तव में प्रत्येक काल में महत्वपूर्ण रहीं हैं। इन सरायों (धर्मशालाओं, बंगलों, रेस्ट हाउसों) ने तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं साँस्कृतिक उन्नति में उल्लेखनीय योगदान दिया। इसीलिए ही इन सरायों को देश के विकास की 'रक्त वाहनियाँ' कहा गया है।

संदर्भित ग्रंथ सूची

1. 'सार्थवाह'– डॉ. मोतीचन्द्र, बिहार हिन्दी राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, 1966
2. शब्दों का सफर (तीन खण्ड) अजित वडनेकर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
3. धम्मपद अठ्ठकथा – सी.एस. उपासक, नव नालंदा महाबिहार नालंदा, बिहार, 1973
4. अशोक के अभिलेख – राजबली पाण्डेय, वाराणसी, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, 1959
5. शेरशाह सूरी – विद्याभास्कर, नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया, 2020
6. शेरशाह सूरी – दामोदर लाल गर्ग, साहित्यागार, जयपुर, 2012
7. तारीख-ए-शेरशाही, अब्बॉस सरवानी, सं. एस.एम. इमाउद्दीन, यूनिवर्सिटी ऑफ ढाका, 1964
8. हिस्ट्री ऑफ इण्डिया (1000-1707 ई. तक) – आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा, 9वाँ संस्करण, 2020
9. मुगलकालीन भारत – आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, शिवलाल एण्ड कम्पनी, आगरा, 9वाँ संस्करण-2020
10. मुगल भारत में सड़क परिवहन – सुभाष परिहार (आगरा-लाहौर राजमार्ग एवं स्थापत्यगत अवशेष) आर्यन बुक इण्टरनेशनल, नई दिल्ली, 2008
11. दिल्ली तेरा इतिहास निराला – वेदप्रकाश गुप्ता, सं. स्वराज अग्रवाल, प्रेम प्रकाशन मंदिर, 1997
12. सिलेब्रेटिंग दिल्ली, नारायणी गुप्ता, पेंगुइन बुक इण्डिया, दिल्ली, प्रा. लि., 2010
13. जुलियानानामा : द स्टोरी ऑफ डोना जुलियाना डा कोस्टा, ए पुर्तगीज कैथोलिक लेडी एट द मुगल कोर्ट (1645-1734) रघुराज सिंह चौहान और मधुकर तिवारी, आउटलुक, 6 सितम्बर, 2017
14. दिल्ली और उसका अंचल – वाई. डी. शर्मा, आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, दिल्ली, 2002